ण्ड-8 संख्या-4

दशम्

बिहार विधान-सभा वादवृत्त

भाग-2

कार्यवाही प्रश्नोत्तर रहित

मंगलवार, तिथि 30 जून, 1992 ई०

सत्यमेव जयते

(सदन में शोरगुल)

महोदय, मैं आगे बढ़कर सदन में कहा, इसके बावजूद भी माननीय सदस्य का कुछ कथन हो इसके मॉडलिटी के बारे में कि वे किस तरह से चाहते हैं तो माननीय मुख्यमंत्री जी के साथ बैठक कराकर वह भी तय करा देंगे इसके बाद क्या बाकी रह जाता है।?

उपाध्यक्ष : ठीक है। अब वित्तीय कार्य लिये जायेंगे।

श्री महेन्द्र झा आजाद : इनसे (माननीय मंत्री श्री जगदानन्द सिंह) कहा जाय कि हर एक डी०एम० को ये क्लियर निर्देश दें।

(सदन में शोरगुल)

उपाध्यक्ष : 45 मिनट का समय इस पर चा गया। अब वित्तीय कार्य होने दीजिये।

वित्तीय कार्यः वित्तीय वर्ष - १९९२-९३ के आय-व्ययक पर सामान्य वाद-विवाद :

उपाध्यक्ष : माननीय सदस्य श्री राम परीक्षण साहु ।

श्री राम परीक्षण साहु : उपाध्यक्ष महोदय, मैं बजट के पक्ष में बोलने के लिये खड़ा हुआ हूँ। मैं डाक्टर साहब का भाषण बहुत गौर से सुन रहा था। "बहुत शोर सुनते थे बाजुए दिल में, जो काटा तो कतराय खून निकला।" वही बास चीज जो बहुत दिन से बोलते रहे हैं वहीं बोलते आ रहे हैं और बेशर्मी का इजहार करते आ रहे है। मैं कहता हूँ कि इनको बोने का हक नहीं है, इन्होंने आर्थिक अराजकता के विषय में सरकार पर चोट किया, सरकार पर इन्होंने आर्थिक अराजकता का चोट किया गया, मैं आपको बतलाना चाहता हूँ कि इस देश में आर्थिक अराजकता है। तो क्यों 3 अरब रुपये विदेशी पूंजी जो भारत के अन्दर निवेश होना था उपाध्यक्ष महोदय, नहीं हो सका। क्यों? भारतीय बैंक जो हैं इनकी शाख अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में गिर गई? क्यों गिर गई? 3 हजार 79 करोड़ रुपया का घोटाला हर्षद हमेता ने जो किया, इसमें तीन मंत्री केन्द्र के शामिल हैं- आज इसके चलते चरमरा गई है सार आर्थिक व्यवस्था।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको बतलाना चाहता हूँ कि अमेरिका, यूरोप दोनों देश की भविष्य निधि हिन्दुस्तान के बैंक में जमा होनी थी, जो नहीं किया गया। क्यों नहीं किया गया? हिन्दुस्तान की आर्थिक व्यवस्था चरमराई है लूट की वजह से, हर्षद मेहताफण्ड के वजह से, शेयर स्कैंडल के वजह से और भी बहुत सारे इस तरह के घोटाले हैं केन्द्र के अन्दर इसके वजह से पूरी आर्थिक स्थिति चरमरा गई है इनकी शर्म आनी चाहिये । आज इनके प्रध ानमंत्री कटोरा लेकर विदेशी से भीख मांग रहे हैं, कटोरा लेकर घू रहे हैं जर्मनी जापान के अन्दर जा रहे हैं और कह रहे हैं कि अनुदान दीजिये और जो विदेशी पूँजी निवेश होना चाहिए था, वह विदेशी पूंजी निवेश होने की स्थिति नहीं है। वास्तव में इन्होंने जो कहा देश के अन्दर मैं पूरे दावे के साथ कहना चाहता हूँ कि आर्थिक स्थिति चरमारा गई है, सारा सोना इस देश का विदेश में फर्जी और गिरवी में चला गया, रख दिया गया इस कारण पूरे देश की स्थिति चरमरा गई हैं यह बात मैं भी स्वीकार करता हूँ, लेकिन स्वीकार करता हूँ भारत वर्ष के लिये, बिहार के लिये नहीं। बिहार एक ऐसा प्रदेश है जहां का मुख्यमंत्री माननीय श्री लालू प्रसाद यादव हैं, जो बिहार को बचने का काम किया है। ये डाक्टर नकली है, ये नकली डाक्टर है, मुझको याद है 1977 का जमाना, 1978 का जमाना ये जाली डिग्री वाला डाक्टर है, इनको समझदारी नहीं है, इनको समझदारी नहीं है। उपाध्यक्ष महोदय, मैं बतलाना चाहता हूँ कि गार्डगिल फार्मूला क्या है? इसके अंदर है कि जितना जिला बढ़ेगा, कमीशनरी बढ़ेगी, अनुमण्डल बढ़ेगा एडमिनिस्ट ठीक प्वायंट ऑफ भयू से उतना केन्द्र से अनुदान ज्यादा मिलेगा केन्द्र से अनुदान ज्यादा मिलेगा। और एडमिनिस्ट्रेटीव प्वांयट ऑफ भ्यू से हमारा शासन, प्रशासकीय क्षमता बढ़ेगी। हमारे यहां क्षमता बढ़ेगी। इसलिए, उपाध्यक्ष महोदय, डिवीजन का निर्माण, जिला का निर्माण और प्रखण्ड का निर्माण आवश्यक है। ये ईकोनोमिक्स के विद्धान हैं और कह रहे हैं कि गलत हो रही है, डिवीजन बन रहा है, तो गलती हो रही है, जिला बन रहा है तो गलती हो रही है। इनको समझदारी नहीं है। वास्तव में इनकी डिग्री जाली है। इसलिए समझदारी नहीं है।

उपाध्यक्ष महोदय, ये हमलोगों पर चार्ज लगाते हैं कि जनता दल और बी०जे०पी० ने राष्ट्रपति के चुनाव में समझौता किया है। हम कहते हैं कि बी०जे०पी० और कांग्रेस ने समझौता किया है जिसका चोट हमलोगों को

सहना पड़ता है। आप वह दिन भूल गए कि स्पीकर का चुनाव बी०जे०पी० के समझौता से हुआ और उसके बदले हमको डिप्टी स्पीकर का पद दिया लोक सभा में। है कोई माँ का लाल? केन्द्र में कांग्रेस का हुकूमत है या बी०जे०पी० का हुकूमत है? हमारे मुख्यमंत्री बी०जे०पी० के सख्त विरोधी हैं।

श्री युगेश्वर झा : उपाध्यक्ष महोदय, सत्तारूढ़ दल का स्पीकर और विरोधी दल का डिप्टी स्पीकर होता है। इसी आधार पर बनाया गया है, न कि कांग्रेस और बी०जे०पी० के समझौता के आधार पर।

श्री राम परीक्षण साहु : ये कांग्रेस वाले माईनोरिटी के विरोधी हैं। दिनांक 23.6.92 "हिन्दुस्तान" अखबार में खबर छपी है। डा० जगन्नाथ मिश्र कहते हैं कि पूर्व मुख्यमंत्री सत्येन्द्र बाबू अल्पसंख्यकों के विरोधी हैं और नई दिल्ली में बैठें सीताराम केसरी को सत्ता का सबसे बड़ा दलाल की संज्ञा दी है। भागवत झा आजाद का हाथ भागलपुर दंगा में रंगी हुई हैं। आज वैसे लोग चुनौती दे रहे हैं। डा० जगन्नाथ मिश्र ने यह कहा है, हिन्दुस्तान में ब्यान छपा है। उपाध्यक्ष महोदय, एक बात मैं कहना चाहता हूँ कि सत्येन्द्र बाबू ने कहा कि अगर मैं दोषी हूँ और भागवत झा आजाद दोषी हैं तो डा० जगन्नाथ मिश्र भी दोषी हैं। उन्होंने 25.6.92 के अखबार में कहा कि अगर मेरा हाथ दंगा से रंगा है तो डा० जगन्नाथ मिश्र भी उसके दोषी हैं। यह सच है कि कांग्रेस आरोप प्रत्यारोप लगा रहा है। इसके लिए, उपाध्यक्ष महोदय, मैं सबूत पेश कर सकता हूँ। इन्होंने क्या काम किया? उर्दू, जो राज्य का सेकेंड लैंगुएज है, जो पब्लिक सर्विस कमीशन का भाषा नहीं बनाया और न ही ऐच्छिक विषय बनाया। इन्होंने क्या किया? मैथिली को कमीशन का भाषा बना दिया ताकि ब्राह्म्ण लोगों की बहाली की जा सके। इसके लिए मैं चुनौती देता हूँ। इन्होंने मुसलमानों को छटनी करने का काम किया। हमारी सरकार ने उर्दू को कानूनी दर्जा दिया है, मुसलमानों को कानूनी दर्जा दिया है। है कोई माई का लाल जो इस चुनौती को स्वीकार करे? हमारे माननीय मुख्यमंत्री ने उर्दू टाईपिस्ट की बहाली की। उन्होंने माईनरिटी कल्याण बोर्ड बनाया। करनी और कथनी में बहुत फर्क है। इनके कथनी और करनी में फर्क है। डाक्टर साहब डिग्री लेकर दिल्ली चले जाय, यहाँ इनका गुंजाईश नहीं है।

उपाध्यक्ष : आप विषय वस्तु पर बोलिये?

श्री राम परीक्षण साहु : ये लोग मेरा समय बर्बाद कर रहे हैं। उपाध्यक्ष महोदय, लालू यादव जी के राज में एक भी दंगा नहीं हुआ, यह इनके लिए चुनौती है। आज मुसलमान भाई हमलोगों से कहते हैं कि आज हमलोग समाज में शकुन की जिन्दगी जीते हैं। यह मुसलमान लोगों की राय है। इनके कहने से.

डा0 शकील अहमद : उपाध्यक्ष महोदय, मैं व्यवस्था पर हूँ। माननीय सदस्य ने कहा कि लालू यादव जी के राज में एक भी दंगा नहीं हुआ। इनको मैं बताना चाहता हूँ कि 1946 में जहाँ दंगा नहीं हुआ था, वही आज पटना सेन्ट्रल में लालू यादव जी के नाक के नीचे दंगा हुआ, पटना सिटी में इनके राज में नाक के नीचे दंगा हुआ है। ये गलत बयानी क्यों कर रहे हैं?

श्री राम परीक्षण साहु : उपाध्यक्ष महोदय, लालू यादव और शरद यादव ने इसी पटना में कहा कि अगर एक भी मुसलमान पर ख़तरा पहुंचे तो जनता दल के साथी 100 गर्दन झुका देंगे। अगर एक भी मुसलमान पर खतरा हो, तो जनता दल के 100 लोग अपनी गर्दन कटवा लेंगे। इसलिए आज एक भी मुसलमान का गर्दन नहीं कटा, यह लालू यादव जी का भाषण है। यह इनके लिए चुनौती है, क्या इसका जवाब है, डाक्टर साहब के पास उपाध्यक्ष महोदय, कांग्रेस के लोग कहते हैं कि आज बिहार का लॉ एण्ड आर्डर की स्थिति खराब है डाक्टर साहब आप अपने आपको झाँक कर देखें । जो दूसरे को गुनहगार कह रहा है, वही पहले गुनहगार है, जो दूसरे को कातिल कह रहा है, वही पहले कातिल है। आपको याद होगा, 1980 में परसबीघा कांड, 85 में लक्ष्मीपुर कांड,88 में नोन्हीनगमा कांड, और दमूही खगरा कांड, 89 में भागलपुर का कांड। 1980 के नरसंहार में 28 लोग, 82 नरसंहार में 11,83 में 5,84 में 20,85 में 22,86 में 52,87 में 103,88 में 60,89 में 107। पुनः डाक्टर साहब 1990 में आये तो 58 लोग मारे गये। इनके दामन में खून का जो दाग लगा हुआ है, वह खून का दाग धुला नहीं है, जिनके दामन में खून लगा हुआ हो, वो लॉ एण्ड आर्डर की क्या बात करेगा। मैं इनको चुनौती दे रहा हूँ कि आज उपाध्यक्ष महोदय, बिहार गरीबों का राज्य हो गया है। डाक्टर साहब कहते हैं 7 करोड़ जनता को संभाल लेंगे। लेकिन मैं उपाध्यक्ष महोदय, बताना चाहता हूँ कि आज इस राज्य की जनसंख्या 7 करोड़ नहीं बल्कि 8 करोड़ हो गयी है। यह राज्य 8 करोड़ जनता की है, न कि 80 लाख लोगों की है। डाक्टर साहब 8 करोड़ जनता के नहीं है, बल्कि ये 80 लाख जनता के हैं। लेकिन लालू यादव जी आज 8 करोड़ जनता के रहनुमा है तथा 8 करोड़

जनता के लिए हमारे मुख्यमंत्री जी काम कर रहे हैं। इनके द्वारा शल्य चिकित्सा समाज का हो रहा है। उपाध्यक्ष महोदय, शल्य चिकित्सा में चीर-फाड़ होता है और जब चीर-फाड़ होता है, तो दर्द होता है। दर्द इसलिए होता है कि चीर-फाड़ से बीमारी ठीक होता है, दवा से ठीक नहीं होता है। इसलिए आज समाज के अंदर हमारे मुख्यमंत्री द्वारा शल्य चिकित्सा हो रहा है। आज बिहार में गरीबों के लिए रैन-बसेरा बन रहा है, मुशहर लोगों के लिए पटना में घर बन रहा है। आज पासी लोग के लिए ताड़ी फ्री कर दिया गया है।

श्री राम परीक्षण साहु : इनके कलेजे में इस बात के लिए दर्द है कि रिजर्वेशन लागू हो रहा है। दर्द इस बात के लिए है कि आज धोबी घाट बन रहा है। इनको दर्द इस बात के लिए है कि पटना शहर में खटाल बन रहा है। गरीबों के लिए जो काम हो रहे हैं इसके लिए नको दर्द है। धोबी केकाम के लिए, पासी के काम के लिए ये दर्द नहीं मान रहे है।। जो हमारे सहनी भाई हैं जो मछली मारकर अपनी जीविका चलाते हैं उनके लिए मछली मारना फ्री कर दिया गया है क्या इसको वे दर्द मान रहे हैं। हमलोग मण्डल कमशन छोड़ने वाले नहीं हैं। डाक्टर साहेब आप अपनी जगह खोजिए। आपका राज लूटेरों का राज था, आपका राज डकैतों का राज था, आपका राज जंगी राज था। मैं। साफ शब्दों में कहना चाहता हूँ उपाध्यक्ष महोदय, कि अब इनका डा० जगन्नाथ मिश्र इंस्टीच्युट औफ टेक्नोलॉजी नहीं हैं, क्यों नहीं है? अब इनको माल नहीं मिलने वाला है। इंजीनियरिंग कालेज में दाखिला लेने के लिए माल नहीं मिलने वाला है। अब ललित नारायण मिश्र इंस्टीच्युट नहीं हैं जहां पर आप एयर कंडीशन में बेठकर आम चाभियेगा ओर फल चाभियेगा। यह राज आपका चलने वाला नहीं है। लालू यादव ने टेक ओवर कर लिया है। अब जरा सा कमाई करिये रोड पर आकर। यह शासन अब आपको मिलने वाला नहीं है। यह सरकार माफियों की दुश्मन है। यह सरकार शिक्षा माफिया का दुश्मन है।

उपाध्यक्ष : आप 5 मिनट में समाप्त करिये।

श्री राम परीक्षण साहु : 5 मिनट में ही खत्म करेंगे। यह राज माफियों का दुश्मन है। ट्रेनिंग स्कूल खोलकर शिक्षा माफिया समाज को लूटने का काम करते थे उनकी यह सरकार दुश्मन है। शिक्षा माफिया कैसे रुपया हासिल करते थे। यह सरकार सेल्स-टैक्स माफिया की दुश्मन है। वे कहते हैं कि अब कंपाउडिंग

करतं हैं। अब अफसरों के हाथ में नहीं जायेगा। अब टैक्स बढ़ेगा । दुगुणा, तीगुणा टैक्स मिलेगा और अफसरों को घूस नहीं मिलेगा। यह मामला तय हो गया है। उपाध्यक्ष महोदय, कोयला लाईसेंस फ्री कर दिया गया है। 20-20 हजार रुपया जी लाईसेंस लेने में लग रहा था वह अब नहीं लगा करेगा। लूटने का राज खत्म हो गया है। अब राज बदला है और गरीबों का राज आया है। साधारण लोगों का राज आया है। हर तरह के माफिया पर चोट हो रहा है। एन०टी०पी०सी० का जो कर्जा है वह इनके जमाने का कर्जा है जिसको हम आज दे रहे हैं । आज 12673 लाख रुपया हमलोगों ने बिजली विभाग का बचत किया है केवल तेल कंजप्शन को बचाकर और अपना प्रोडक्शन बढ़ाकर। सब इकाईयां बंद हो गयी थी उन सब को खुलवाया गया है। हमारा राज बदला है। अब हमलोगों को, बिहार की जनता को भरोसा हो गया है कि पटना गाँधी मैदान बेचने वाले का राज आने वाला है। पटना गाँधी मैदान बेचने वाला राज्य का मुख्यमंत्री नहीं होने वाला है। रेलवे प्लेटफार्म बेचने वाला आदमी मुख्यमंत्री नहीं होने वाला है। यह लोगों को समझदारी हो गयी है। उपाध्यक्ष महोदय, ये कह रहे थे कि शिक्षा पर हमलोग चोट कर रहे थे तो ये क्या चोट कर रहे थे। इनको शर्म नहीं आती है। ये इतने बेशर्म हो गए हैं कि सच्चाई पर पर्दा डालना चाहते हैं। इनकी शिक्षा भी सेन्ट्रल विद्यालय खोलने की जबकि हमारी शिक्षा है जन साधारण की शिक्षा गरीबो की शिक्षा, चरवाहों की शिक्षा इनलोगों को शिक्षा मिलेगी। सह मामूली बात नहीं है। 70 वर्ष पहले अमरीका के अंदर ज़ब पूरी समाज को शिक्षित करने की बात आयी तो उनके यहाँ एक कबीला होता थातो वहाँ के शासक ने कहा कि कबीला के साथ शिक्षा जायेगी। बकीला पढ़कर शिक्षित हो जायेगा। 70 वर्ष पहले अमरीका के अंदर यह हो चुका है और आज हमारे यहाँ यह चरवाहा विद्यालय क्या है। जो घांस गढ़ने वाले लोग हैं, घास चराने वाले लोग हैं उनके पास चरवाहा विद्यालय जायेगा और उनके पास विद्यालय को पहुंचना होगा। इनको समझदारी नहीं हैं। ये पढ़ते नहीं है। न रामायण से इनको ताल्लुकात है और न सुख सागर से ताल्लुकात है। हम समझते हैं कि बी०जे०पी० वालों को ताल्लुकात होगा मगर उनको भी ताल्लुकात नहीं है। भगवान कृष्ण गाय चराते थे और शिक्षा पाते थे, गाँधी जी बकरी चराते थे और जीसस क्राईस्ट भेड़ चराते थे। उनके बीच शिक्षा ओर संस्थाएं चलती थीं। गाँवों के लोगों को शिक्षित करने के लिए ाज काम हो रहा है लेकिन इनको समझदारी नहीं है। इनकी आँख खोलने के लिए मैं कहता हूँ कि यूनीसेफ के अध्यक्ष ने कहा

हैं कि चरवाहा विद्यालय के लिए में लालू जी को अनुदान दूंगा। डाक्टर साहेब आप समझ लें कि हमारा क्या काम हो रहा है। डाक्टर साहेब नहीं चाहते थे। कि आभ लोगों की शिक्षा मिले।

लड़ना है उपाध्यक्ष महोदय, बी०जे०पी० कांग्रेस हमारे साथ लड़े, लड़ना है तो रोयाल्टी के लिये, जिससे केन्द्र से पैसा हमको हासिल होगा। लड़ना है किन बात के लिये भाड़ा समानीकरण के लिये जिससे बिहार का उद्धार होगा, रोजगार के अवसर बढ़ेगे। लड़ना है तो मिनरल का हेडक्वार्टर बिहार खोलने के लिये। जब मिनरल का हेडक्वार्टर खुलेगा तो रोजगार मिलेगा। लड़ना हैतो सेंट्रल युनिवर्सिटी बिहार में नहीं है।, यू०पी० में है, दिल्ली और बम्बई में है हमारे यहां लेकिन सेंट्रल यूनिवर्सिटी नहीं है। अब एक ही बात कह कर मैं अपनी बात समाप्त करना चाहता हूँ।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस बात की मांग करता हूँ दरभंगा के अन्दर मैकडनिल्स स्कूल जो विदेशियों के नाम पर है, हम अनुरोध करना चाहते हैं सरकार से कि इनका नाम बदलकर पंडित रामानंद मिश्र के नाम पर या दूसरे नाम पर रखा जाय।

उपाध्यक्ष महोदय, अंत में इतना कहकर मैं दिनकरजी की एक कविता सुनाकर समाप्त करना चाहता हूँ। दिनकरजी ने कहा है:

"व्यक्ति, वंश या दल विशेष क्य देश गुलाम नहीं है।
उसकी ही इच्छा जनता की, सुबहो शाम नहीं है।
सत्ता एक धरोहर, जनता जब चाहे तब ले लें।
अपने पावन बहुमत से जिसको चाहे वह दे दे।"

मैं डा० मिश्रा को सलाह देता हूँ कि अब स्कैंडल रेल का दिल्ली में है, जमीन के अन्दर का स्कैंडल दिल्ली में है, पानी का स्कैंडल, हवा का स्कैंडल दिल्ली में है। यहाँ कवायद करने से कुछ होने वाला नहीं है। वही जाइयें, आपकी भी गुंजाईश हो जायेगी। गरीब बिहार के लोगों पर रहम कीजिए

इन्हीं शब्दों के साथ मैं पूछना चाहता हूँ और कहना चाहता हूँ कि इनकी पार्टी के मौलाना अब्दुल्ला बुखारी, रहमत बुखारी और रहमान ने कहा कि मध

बनी के अन्दर जो चार कार्यकर्ता मारे गये, इन्होंने केवल उनके ऊपर घड़ियाली आँसू बहाये हैं, कोई कार्य नहीं किया।

(व्यवधान)

उपाध्यक्ष : आप कृपया आसन ग्रहण करें। श्रीमती वीणा शाही। जब भी कोई नया सदस्य या नयी सदस्या बोलते हैं, सदन धैर्यपूर्वक, शांतिपूर्वक इसको सुनता है। मा० सदस्या नयी हैं, पहली बार बोल रही हैं, मेडेन स्पीच है, उसके अनुरूप काम मा० सदस्यगण करेंगे।

श्रीमती वीणा शाही : उपाध्यक्ष महोदय, उपस्थित सभी माननीय सदस्यगण ।

यहाँ सदन में आपके समक्ष एक नव निर्वाचित सदस्या खड़ी है और आप सबों का सहयोग ओर आशीष की अपेक्षा रखती है।

उपाध्यक्ष महोदय, आपके समक्ष जो सदस्या खड़ी है वह एक ऐसे क्षेत्र से निर्वाचित हुयी है जो तनावग्रस्त है। मैं इस सदन में आज बोलने के लिये खड़ी हूँ। सदन में खड़ा होने में हमारी ज्यादा लालसा नहीं है क्योंकि जिस क्षेत्र का मैं प्रतिनिधित्व कर रही हूँ वह क्षेत्र अभी टूटा हुआ है, बिखड़ा हुआ है तनाव से ग्रसित है और वहाँ की जनता उदास है, बेबस है और दहशत में है।

उपाध्यक्ष महोदय, चुनाव के बाद वहां जातीय तनाव व्याप्त है। उसके परिणामस्वरूप आपस में लोग मारपीट कर रहे हैं। आम और लीची के बगान काटे जा रहे हैं। निदोष लोगों पर झूठा इल्जाम लगाकर उनको फंसाया जा रहा है। जब वे निर्दोष लोग प्रशासन के समक्ष जाते हैं तो उनकी सुनवाई नहीं होती है। वे उदास है, बेबस हैं ओर परेशान हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक ऐसे क्षेत्र के प्रतिनिधि के रूप में खड़ी हूँ जो टूटा हुआ है, बिखरा हुआ है। हमारे ऊपर दायित्व है कि उस टूटे हुये समाज को, बिखरे हुये इंसान को सुरक्षा दें ओर उनकी सुने और उनका दुख बाँटे हमारे चुनाव के समय जब माननीय मंख्यमंत्री हमारे क्षेत्र का दौरा कर रहे थे तो उन्होंने कहा था वोट और बेटी जात में ही देनी चाहिये। (शेम शेम की आवाज)

उसके फलस्वरूप वहाँ ऐसी व्यवस्था बन गयी हैं कि आपस में लोगों का बोल चाल बंद हो गया और लोग एक दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री से कहना चाहती हूँ कि वे किसी क्षेत्र विशेष के मुख्यमंत्री नहीं हैं बल्कि वे पूरे प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं और इस प्रदेश के सम्पूर्ण लोगों को सुरक्षा उनकी जिम्मेवारी है। मैं आपके माध्यम से मुख्यमंत्री जी से अनुरोध करती हूँ कि वे इस पर ध्यान दें और जो जातीय तनाव व्याप्त है उसको दूर करने का उपाय करें ताकि वहां की जनता जातीय तनाव और भय से मुक्त हो सके।

उपाध्यक्ष महोदय, दूसरी बात मैं आपके सामने रखना चाहती हूँ यह है कि श्रीमती कुमुद चौधरी, एस०पी० का तबादला कर दिया गया । मैं माननीय मुख्यमंत्री से अनुरोध करते हुये कहना चाहती हूँ कि जो प्रशासन तंत्र है, एस०पी० और अन्य जो इसके लिये सरकारी मशीनरी है............. उसको प्रतिशोध की भावना से, बदले की भावना से तबादला कर दिया जाय यह शर्मनाक बात है। इस संबंध में मुख्यमंत्री जी से मैं चाहूंगी कि वे इस संबंध स्पष्टीकरण दें। यह पहला चुनाव है वैशाली का जहाँ बूथ पर कोई मर्डर नहीं हुआ, अव्यवस्था नहीं हुयी। इसका परिणाम हुआ कि श्रीमती कुमुद चौधरी का तबादला ही गया। मैं मुख्यमंत्री से अनुरोध करूगीं कि वे इस बात के लिये स्पष्टीकरण दें कि किस कारण से श्रीमती कुमुद चौधरी का तबादला हुआ, उन्होंने कौन सा ऐसा काम किया जिसकी वजह से उनका तबादला हुआ।

उपाध्यक्ष महोदय, तीसरी बात है श्री हेमेन्त शाही जो हमारे पति भी थे । उनकी हत्या हुयी। श्री शाही एक ही नहार और लोकप्रिय इंसान थे। उनकी शेहरत थी। वे सरकारी सेवा छोड़कर राजनीति में आये थे। उनकी हत्या हुयी। जो लोग उनके हत्यारे हैं उनको जनता दल का संरक्षण प्राप्त है। मै। इस बात को फिर कहती हूँ किं वे हत्यारे आज भी सरे आम घूमते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, आप इस बात को माननीय मुख्यमंत्री को बतलावें कि आज तक हत्यारों की गिरफ्तारी नहीं हुई है। जो अभियुक्त हैं वे सरे आम घूम रहे हैं, सभी लोगों को इसकी जानकारी है। क्या कारण है कि मुख्यमंत्री चुप हैं, वे स्पष्टीकरण दें।

कोई स्पष्टीकरण नहीं, कोई बात नहीं, इस विषय पर कोई कंसेत नहीं मिल

रहा है, उनका दल खुप है, वे स्पष्टीकरण दें। आप ऐसा करें, हमारा संदेश उनके समक्ष पहुंचाएं उपाध्यक्ष महोदय, हेमंत शाही का गर्उर हुा, उसकी जांच सी०वी०आई० से करावें। उपाध्यक्ष महोदय, एक बात और कहना चाहती हूँ। जिस समाज की हमलोग मिलकर कल्पना करते हैं, वह समाज कैसा हो, शांतिपूर्ण हो, जिस समाज में एक दूसरे की बात सुने और सभी मिलकर प्रगति करें। मगर सामाजिक न्याय की बात करने वाले जो दंभ भरने वाले हैं और जातीय तनाव पैदा कर रहे हैं सामाजिक न्याय की बात करने वाले जातय तनाव फैलाए हें। मगर मुख्यमंत्री सपना देखना छोड़ दिए हैं तो हम उनको एक नये समाज का सपना देंगे, हमने सपना देखना नहीं छोड़ा है। वह समाज कैसे होगा उस समाज में ठहराव रहेगा, शांति रहेगी, लोग एक दूसरे से मिल कर बातें करेंगे और अपनी समस्याओं का समाधान करेंगे और उस समाज में इंसान पैदा होंगे। वह समाज ऐसा नहीं होगा जिसमें लोग मर जाते हैं, दब जाते हैं, कुचले जाते हैं, दौलत के नशे में चूर रहने वाले लोगों से अंधेरी कोठरी में दब जाते है। हम सभी माननीय सदस्यों को अन्रात्मा की आवाज देते हैं कि आप ऐसे समाज की रचना करें जिसमें स्वार्थ नहीं हो, जिसमें सेवा भावना हो और हमोग भी तो सेवा भावना से यहां पहुंचे हैं। मुख्यमंत्री जी को हमारा संदेश दे दें कि अगर उन्होंने सप्पना देखना छोड़ दिया है तो हमसे सपना लें क्योंकि हमने सपना देखना नहीं छोड़ा है। जो समपना हमने देखा है वह हमारे स्वर्गीय पति का सपना है और भी इसी सेवा भावना से प्रेरित होकर यहाँ पहुंचे थे। तो आप सभी माननीय मुख्यमंत्री को यह संदेश दे देंगे कि उन्हें सपना नहीं हैं तो हमसे सपना ले लें। हम अपने स्वर्गय पति के सपने को मरते दम तक उठायेंगे और उनकी आवाज सारे लोगों तक पहुंचायेंगे। जो लोग हमारे सामने खड़े हैं, अगर उनके सपने विखर गए हैं, उनके पास उज्जवल भविष्य के सपने नहीं हैं, तो मुझसे सपने लें और नये समाज की सृष्टि करें जिसमें सब लोग एक दूसरे का सुनें और सब को देखें और झूठे सामाजिक न्याय की बातें न करें।

श्री सत्यनारायण सिंह : उपाध्यक्ष महोदय, बजट पर चर्चा करते हुए अपना विचार रखना चाहता हूँ। मैं कहना यह चाहूँगा, मैंने बजट सत्र में कहा था कि यह हमारा विकास का साल है और विकास के साल में हम बिहार का विकास चाहते हैं। लेकिन कैसा विकास चाहते हैं। बिहार में पिछले बजट में यानी मार्च महीने में बाइस सौ करोड़ योजना मद में रखा गया था, वह घटकर

2000 करोड़ पर आया और उससे घटकर 1100 करोड़ पर चला आया और उसके बाद अब सुना है कि साढ़े सात सौ करोड़ हो गया और इसी पर हमारे मुख्यमंत्री विकास की बात करते हैं। तो देखना पड़ेगा कि कैसा विकास हुआ है। हम लोगों का विधायक कोर्ट का पांच कि०मी० रोड अभी पूरा नहीं हुआ, किसी भी विभाग में पैसा नहीं है। सारा कार्य विहार का पैसे के अभाव में ठप है। हमलोग सहयोगी दल हैं, लेकिन दुःख के साथ कहना पड़ता है कि जैसा भ्रष्टाचार कांग्रेस के राज्य में था, वैसा ही भ्रष्टाचार इस राज्य में भी है। मंत्री लोगों को कों काम ही नहीं है, क्योंकि पैसा ही नहीं हैं हमारा कहना है कि भ्रष्टाचार का बोलवाला है बिहार में और कई सवाल उठे हैं। मैं तो चाहूंगी कि मंत्री मंडल के लोगों को इमानदारी के साथ अपनी सम्पति का ब्यौरा देना चाहिए।

(इस अवसर पर माननीय सभापति महोदय श्री इन्दर सिंह नामधारी आसन ग्रहण किये।)

मैं नाम नहीं कहूंगा, सभापति महोदय, लेकिन कई मंत्री ऐसे हैं जो सम्पति कमाए हैं, इसलिए मैं सहयोगी दल के नाते कहुंगा कि इनके मंत्रीमंडल को अपनी सम्पत्ति का बयौरा देना चाहिए।

दूसरी बात, मैं कहना चाहूंगा कि फिजूल खर्ची को लेकर पिछली बार जो नाटक हुआ, सो हुआ, इनके जो सभापति, अध्यक्ष उपाध्यक्ष निगमों के बने, वे विधान सभा से भी पैसा लेते हैं, और कौरपोरेशन से भी लेते हैं, इस पर रोक लगाना चाहिए। जैसे कांग्रेस वाले कागज पर करते थे, उसी तरह आप जिला बनाए, अनुमंडल बनाएं, प्रखंड बनाए, दो प्रखंड पर अनुमंडल बना दिया है अपने लोगों को खुश करने के लिए, लेकिन एक तरफ विकास के लिए पैसा नहीं है और दूसरी तरफ पैसे लुटाए जा रहे हैं।

सभापति महोदय, जयरामपुर, बीहपुर, भौली सकरपुरा इलाकों के संबंध के बारे में आज से दो दिन पहले अखबार में आया था कि अपराधी गिराहों ने विगत दो वर्षो में 150 व्यक्तियों की हत्याएं की हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, अपराधी लोग किसी को छोड़ते नहीं हैं, इसए मैं मुख्यमंत्री से कहना चाहता हूँ क्योंकि हम सहयोग दल हैं। आप कांग्रेस की बात करते हैं कि उनके समय में विधि व्यवस्था अच्छी नहीं थी, लेकिन आज विधि

व्यवस्था कैसी होनी चाहिए, आप खुद समझ सकते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, बिहार के औद्योगिक नीति के चलते बिहार में कोई उद्योग धंधा नहीं लगाना चाहता हैं इसका दो कारण है: पहला, बिजली पर्याप्त मात्र में नहीं मिलती है ओर दूसर, सरकारी तंत्र का कोई सहयोग नहीं मिलता है जिसे कुव्यवस्था कहते हैं। साथ ही, महोदय इस प्रदेश में औद्योगिक सम्नता की भी समस्या है। कल्ह जपला सिमेंट फैक्टरी की समस्याओं को लेकर माननीय सदस्य अनशन पर बैठे थे लेकिन हमको तो लगता है कि यह सरकार जानबूझ कर चाहती है कि कारखाना बंद हो।

बकाये को लेकर बिहार सरकार को बिजली की लाईन काटने की धमकी दी गय। हमारे

विधायक जब बोर्ड के चेयरमैन से मिलने गये तो उनके साथ ज्यादती की गयी। यही है आपकी सरकार का विजली बोर्ड । सभापति मोदय, इसलिए मैं चाहूंगा कि अगर औद्योगिक विकास आप चाहते हैं तो आप बिहार में कल कारखना को बंद नहीं होने दें। सके लिए आपको कुछ करना पड़ेगा केन्द्र सरकार तो चाहती है कि कल कारखाना बन्द हो जायें। वो चाहती है कि पब्लिक सेक्टर को प्राईवेट सेक्टर में बदल दें। वो चाहती है कि पब्लिक सेक्टर को टाटा, बिड़ला के हाथा में दे दें। सभापति महोदय अंत में एक बात और कहना चाहता हूँ कि केन्द्र सरकार हमारे देश को निदेशियों के हाथ गिरब रख रही है इसमें कों दो राय नहीं है। आज बिहार सरकार क्या कर रही है? बिहार सरकार भी विश्प बैंक से जर्मन से टाटा और गोयनका से हाथ मिलाती है। सभापति महोदय अगर टाटा बिड़ला के हाथ में केन्द्र सरकार बिल गयी है तो आप भी बिक गये हैं। इस पर गम्भीरता से सोचना होगा। सभापति महोदय, भूमि सुधार के संबंध में हमारे मुख्यमंत्री ने कई घोषनाएं की ओर इसके लिए सक्सेना साहब को प्रभारी बनाया गया है। भूमि सुधार में तीन आदमी हैं। एक रेवन्यू सेकरेटरी हैं और प्रभारी हैं श्री सक्सेना और एल०आर० सिंह हैं। उन्होंने कहा कि हम एक लाख एकड़ भूमि को बाटेंगे अभी तक 15 हजार एकड़ जमीन भी नहीं बांट सके हैं। बड़े-बडें जमींदार भूमि लेकर बैठे हुए हैं। सभापति महोदय, हम खगड़िया जिला से आते हैं वहाँ 24 जून को एस०पी० और कलक्टर ने पुसि बल के साथ 400 घरों को उजाड़ा और बर्बर लाठी खर्ज कियां। एक जमंदार से पैसा लेकर के लाठी चार्ज करवाया ।

सभापति महोदय, बेरोजगारी भी हमारे यहा कम नहीं हैं मुख्यमंत्री 25 हजार लोगों को शिक्षक के पद पर वहाली करने के लिए कहे। आप सुप्रीम कोर्ट में केस को लटकवा दिया। आप कुछ भी वहाली नहीं कर सके। आज बिहार की हालत बहुत ही खराब है। अंत में मैं कहना चाहूंगा कि हम खगड़िया जिला में चतुर्थ वर्ग के 40 कर्मचारियों तृतीय वर्ग के 36 कर्मचारियों को पैसा लेकर के बहाल किया गया । यदि आप चाहते हैं कि सामाजिक न्याय लागू हो तो इस स्थिति में वह कभी लागू नहीं होगा। सभापति महोदय, इनके लिए आप कल-कारखाना खोलें, लोगों को रोजगार दें। अंत में हम एक बात और कहना चाहेंगे कि इसके लिए हम सब मिलकर बिहार के विकास के लिए आवें केन्द्र की उपेक्षा के खिलाफ लड़े और नया बिहार बनाने का संकल्प लें। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपना भाषण समाप्त करता हूँ।

श्री महेन्द्र सिंह "भोगता" :- सभापति महोदय, सरकार के द्वारा जो वर्ष 92-93 का बजट 82 अरब, 66 करोड़ 46 लाख रुपये का है उसके विरोध में मैं बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ। बिगल तीन वर्षो की तुलना में, तीन वर्षो के अन्तराल में जो 30 अरब रुपये की राशि वृद्धि की गयी है। न कहीं चापाकल लगा है, न कहीं रोड बनाया गया है, कुछ भी विकास का काम नहीं हुआ है। सभापति महोदय मुख्यमंत्री बड़ी ही चोंच मिलाकर बात करते हैं। कल भी बड़ी चोंच में चोंच मिलाकर बोल रहे थे। ये चाहते हैं कि ऐसा बोलकर लोगों से समर्थन पावे लेकिन बिहार में विकास का कोई काम नहीं हो रहा है।

सभापति : भोगता जी, आपका तो चतरा जिला बन गया है। विकास तो हुआ ही है।

श्री महेन्द सिंह "भोगता" : यह तो आपके उधर जाने से हुआ है।

श्री राज कुमार "महासेठ": सभापति महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। माननीय सदस्य भोगता जी बोल रहे हैं कि कोई बिकास का काम नहीं हुआ है। आपने भी कहा कि इनके यहाँ विकास का काम हुआ है। तो मैं चाहूंगा कि इतना तो ये जरूर बोलें कि विकास हुआ है।

श्री महेन्द सिंह "भोगता" : सभापति महोदय, जो जनता दल के साथ गया वह वहां इसके गवाह आप हैं। वहां जाने पर आपका कद छोटा कर दिया गया है। झारखंड का भी वही हाल हुआ उनका भी कद छोटा कर दिया गया है। जनता नहीं दलदल है। लालू जी किसी को आगे बढ़ता देखना नहीं चाहते हैं। वे

चाहते हैं कि सब का कद छोटा रहे ताकि हम 20 वर्षों तक मुख्यमंत्री बने रहें। यह मंशा उनकी पूरी नहीं होगी। इनका जो भी भाषण है डपोरशंखी है। इनके पास न तो कोई कार्यक्रम है न कोई नियम है।

श्री कमल पासवान : सभापति महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। इन्होंने जनता दल पर आरोप लगाया कि लालू यादव के तरफ जो जाते हैं वे फंस जाते हैं। सभापति महोदय, लालू जी फंसाने का काम नहीं करते अगर कोई आकर फंस जाते हैं तो वे क्या करें।

श्री महेन्द्र "भोगता": सभापति महोदय, अभी रामपरीक्षण साहु जी भाषण दे रहे थे आज बिहार की छवि क्या है। सारे बिहार में अपराधीकरण हो गया है। आज अपराध के चलते बिहार की जनता त्रस्त है। आप देखें होगे सभापति महोदय, कल झारखंड के इश्यू पर छोटानागपुर के अलग राज्य बनाने के मामले पर।

श्री राम परीक्षण साहु : सभापति महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । उत्तर प्रदेश में जो विभिन्न शहर हैं वहाँ प्रतिदिन घटनाएं हो रही हैं। पोलिटिकल लोग डर के मारे घरों में बन्द रहते हैं। इस पर नजर हमारे माननीय सदस्य भोगता जी को नहीं पड़ रही हैं।

श्री महेन्द्र सिंह "भोगता" : सभापति महोदय, कल आप सदन में देखें होगे। सभी दल अब राज्य की मांग कर रहे थे। जब मुख्यमंत्री वक्तव्य दे रहे थे तो उन्होंने सुधीर महतो जी को बोले कि आप बहुत चमक रहे हैं, वे चूप हो गये उनमें प्रतिवाद नहीं सी०पी०आई० के नेता जो रमेन्द्र बाबू हैं उनको अलग राज्य नहीं चाहिए चूंकि वे उत्तर बिहार से आते हैं ओर दक्षिण बिहार में अपना राज करते हैं। सभापति महोदय, हमारा कहना है कि अलग राज्य की मांग भारतीय जनता पार्टी के लोग ही कर रहे हैं। हमलोग चाहते हैं वनांचल राज्य हो।

श्री त्रिवेणी तिवारी : सभापति महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। माननीय सदस्य से हम आग्रह करेंगे, केन्द्रीय समिति में हमारी पार्टी की ओर से अलग झारखंड राज्य का समर्थन किया गया है। उनका यह कहना कि विधायक दल के नेता उत्तर बिहार में रहते हैं और दक्षिण विहार में राज करते हैं यह शोभा नहीं देता। हम माननीय सदस्य से आग्रह करेंगे कि वे इस तरह की बातें न करें।

श्री महेन्द्र सिंह भोगता :- सभापति महोदय, कांग्रेस पार्टी ने छोटानागपुर को अलग

राज्य करने के लिये एक क्षेत्रीय कमिटी बना दिया है, लेकिन यह सरकार अलग राज्य नहीं चाहती है, यह सरकार चाहती है कि हमलोग आपस में टकराव करते रहें । जब तक अलग राज्य छोटानागपुर और संथालपरगना को मिलाकर वनांचल राज्य नहीं बनाया जायेगा, तब तक छोटानागपुर का विकास नहीं होगा।

सभापति महोदय, मैं अपने क्षेत्र की ओर आपका ध्यान ले जाना चाहता हूँ। सभापति महोदय, आप जानते हैं कि चतरा नक्सल उग्रवादी क्षेत्र है, वहां पर इतनी हत्यायें, अपहरण, लूट हुई, जिससे वहां के लोग भयभीत रहते हैं। चतरा के एम०पी० श्री उपेन्द्र नाथ वर्मा के भगीना का किडनेप किया गया, तीन लाख रुपया लेने के बाद उसको छोड़ा गया। चतरा जिला के रोड पथ की बहुत ही जर्जर हालत है। आज चतरा जिला बन गया, जिला बन जाने के बाद 7 लाख रुपया जिला परिषद को मिला था, लेकिन वह पैसा लौटा दिया गया, जिला परिषद को मिला था, लेकिन वह पैसा लौटा दिया गया, जिला परिषद का एक भी काम नहीं हुआ है। अभी तक डी०सी० का पद स्थापना नहीं हो पाया है और वहाँ का विकास का काम रूका हुआ है। मैं सरकार से आग्रह करूंगा कि वहाँ विकास का कार्य कराया जाय।

दूसरी बात मैं कहना चाहता हूँ कि हमारे क्षेत्र में एक घटना हुई थी 14 तारीख को, दो-चार मुस्लिम लड़के ने एक यादव लड़के की हत्या का प्रयास किया गया और छुरा से मारा, उसके बाद वह थाना ले जाया गया। उसके बाद यह कलर किया गया कि चतरा में साम्प्रदायिक दंगा फैल गया है। वहां के डी०एस०पी० श्री जिवय कुमार यादव हे, वे इस तरह से नंगा नाच कर रहे हैं। एक मुहल्ले में झगड़ा हुआ, एक लड़का पढ़कर जा रहा था, पुसि ने उस लड़के को लेकर पूरा चतरा शहर में इस तरह का नंगा नाच किया है कि घर-घर में घुसकर औरतों ओर मर्दो को पीटा गया। जो परीक्षार्थी इन्टर का परीक्षा दे रहे थे, उनको परीक्षा देने नहीं दिया गया, उसमें से 10 आदमी को गिरफ्तार कर लिया गया। इतना ही नहीं एक 40 वर्ष के सम्मानित व्यक्ति थे, उनको भी गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। सभापति महोदय, मै। मांग करता हूँ कि सदन की कमिटी या किसी वरीय पदाधिकारी द्वारा इस घटना की जांच करायी जाय। जिस तरह की चतरा लि में घटना हुई हे, वह बहुत ही निन्दनीय है ओर जो श्री विजय कुमार यादव, डी०एस०पी० हैं, उनको दूसरे

जगह स्थानान्तरण किया जाय और इस घटना की जांच करायी जाय। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपना भाषण समाप्त करता हूँ।

श्री राजकुमार महासेठ : सभापति महोदय, सदन में जो माननीय मुख्यमंत्री द्वारा 82 अरब 66 करोड़ का बजट सदन में प्रस्तुत किया गया, मैं उसके समर्थन में बोलने के लिये खड़ा हुआ हूँ। मैं आपके माध्यम से सदन का महत्वपूर्ण समय बिहार की गरीबी ओर बजट की ओर ले जाना चाहता हूँ। बिहार का जो इतना पिछड़ापन है उसको आप सभी जानते हैं, इसका कारणक्या है उसके संबंध म कहना चाहता हूँ । सभापति महोदय, कुछ बाते ऐसी होती है जिस ओर सदन का ध्यान ले जाना आवश्यक हे, उसी ओर मैं सदन का ध्यान ले जाना चाहता हूँ। वर्ष 89-90 से लेकर वर्ष 92-93 तक बजट के अंदर जो प्रावधान किया गया है। उसमें तीन अरब रुपये की बढ़ोत्तरी हुई, जिससे कि हम और बिहार की जनता संतुष्ट नहीं है सका क्या कारण है?

श्री सुशील कुमार मोदी : सभापति जी, मेरा व्यवस्था का सवाल है कि माननीय सदस्य वे गलत आंकड़ा दे रहे हैं वे सदन में सही आंकड़ा दें।

श्री राजकुमार महासेठ : सभापति महोदय, मैं समझता हूँ कि माननीय सदस्य श्री मोदी जी का थोड़ा जयादा आंकड़ा का ज्ञानं होगा क्योंकि वे कभी-कभी इस काम को करते भी है। तो मैं बतला रहा था कि 89 से लेकर 92-93 तक तीन अरब रुपये की वढ़ोत्तरी हुई है। मेरा कहना है कि वास्तव में 82 अरब रुपया का जो बजट हमारे सामने है उससे बिहार की जनता संतुष्ट नहीं हैं, लेकिन इसका क्या कारण है, इस पर सदन के 325 माननीय सदस्य ओर बिहार की 8 करोड़ जनता का ध्यान मैं आकृष्ष्ट करना चाहता हूँ। वास्तव में इतनी कमी का कारण केन्द्र सरकार है। केन्द्र सरकार किसी -न- किसी तरह का अंकुश बिहार के विकास पर लगाती रही, किस तरह से बिहार का खिलवार करती रही, और विगत 40-42 साल में जो उनका प्रशासन रहा, यही कारण है कि बिहार का बजट मात्र 82 अरब का अभी तक हुआ है। इसलिये सदन के सभी सदस्यों से मेरा आग्रह है कि दलगत भावना से ऊंचा उठकर सोचे ओर बिहार की जो गरीबी है वदहाली है, इसको कैसे सुधारा जा सकता है। इस पर गहराई से विचार करना है। यह काम सिर्फ लालू प्रसाद मुख्यमंत्री का ही नहीं है। इन मुद्दों को डा० जगन्नाथ मिश्र भी उठाते रहे हैं अपने विकास मंच से लेकिन ज्योंही वे मुख्यमंत्री बन गये इनका विकास मंच बंद

हो जाता हैं। इसलिये मैं कहना चाहता हूँ कि लालू यादव जी मुख्यमंत्री रहते हुये इस सवाल को उठाया है कि बिहार का जो अधिकार रायल्टी का है वह मिले और बिहार का जो खनिज पर अधिकार है उसमें हिस्सेदारी है वह बिहार को मिना चायिे। इसके लिये केन्द्र सरकार से सिर्फ जनता दल की सरकार ही लड़ाई नहीं लड़ेगी बल्कि बिहार के जितने भी 325 विधायक है, जन प्रतिनिधि है उन सबाको मिलकर अपने अधिकार को लेने के लिये, बिहार की बदहाली को दूर करने के लिये लड़ाई लड़नी है।

सभापति : माननीय सदस्य आप अपने इलाको के संबंध में कहें कि वहां आपने क्या किया है?

श्री राजकुमार महासेठ : सभापति महोदय, भलको की जो स्थिति विगत दो साल में थी कि वहां के कर्मचारियों को वेतन नहीं मिल रहा था। लेकिन इस बार सरकार से जो पैसा मिला है पिछले वित्तीय वर्ष में, उस पैसे से वहां के लोगों के बकाये वेतन का भुगतान किया गया है। सभापति महोदय, ओर भी इतना फायदा तो जरूर हुआ कि पिछले साल का पटवन का जो आंकड़ा था उसमें तीन सौ प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है।

अब मैं कहना चाहता हूँ कि माननीय सदस्य वीणा शाही, उनके प्रति हमलोगों के दिल में दर्द है। उन्होंने सदन के सामने जो बाते रखी जिस तरह की भावना प्रगट की ओर जिस परिस्थिति में वे बोल रही थी मैं समझता हूँ कि सदन भी भावनाओं के साथ है। लेकिन कुछ बात के लिये मैं उनको आग्रह करना चाहता हूँ कि, जिसका जिक्र उन्होंने की है, मैं भी उसी क्षेत्र का रहने वाला हूँ, माननीय मुख्यमंत्री ने कभी भी उस इलाके में वोट जाति के नाम पर नहीं मांगा, मुख्यमंत्री ने इस तरह की बात कभी नहीं कहीं शायद माननीय सदस्या घर में थी और जो बातें उनको कहीं गई उसी को उनहोंने व्यक्त किया, उन्हीं बातों को उन्होंने रखा। इसलिए उनकी भी गलती नहीं है, मैं इतना ही समझता हूँ। सभापति महोदय, जो अल्पसंख्यक हैं, पिछड़े हैं, हरिजन हैं, उनको आज एक विश्वास सरकार के अन्दर जमी है । आज स्वतंत्रता के बाद पहली बार इन पिछड़े लोग, अल्पसंख्यक लोग, हरिजन लोगों ने यह समझा है कि सत्ता में हमारी साझीदारी है। वे यह समझते हैं कि हमारे प्रतिनिधि गद्दी पर बैठे हुए हैं। यह पहला ऐसा मौका है............

सभापति : महासेठ जी, आप अपना भाषण समाप्त करें।

श्री राजकुमार महासेठ : मुझे थोड़ा समय और दिया जाय।

श्री उपेन्द्र नाथ दास : सभापति महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न यह है कि इस सरकार को न तो पिछड़े का, न तो अल्पसंख्यक का और न तो हरिजनों का ही विश्वास प्राप्त है।

सभापति : यह व्यवस्था का प्रश्न नहीं है।

श्री राजकुमार महासेठ : सभापति महोदय, मैं माननीय सदस्य से इतना ही कहना चाहता हूँ कि जब अल्पसंख्यक आयोग को कानून का दर्जा देने के संबंध में इन्होंने पिछले सत्र में इसका विरोध किया था, इसलिए रिऐक्शन होना स्वभाविक है।

सभापति : अब आप अपना भाषण समाप्त करें।

श्री राजकुमार महासेठ : सभापति महोदय, थोड़ा और समय दिया जाय। सभापति महोदय, मैं कहना चाहता हूँ कि बिहार की जो बदहाली है, उसमें अगर आप सुधार लाना चाहते हैं तो सदन के सभी माननीय सदस्यों को दलगत भावना से ऊपर उठकर काम करना पड़ेगा। गाडगिल फार्मूला जो है, उसमें जब तक संशोधन नहीं किया जायेगा, तब तक सुधार नहीं हो सकता है। इसके लिए केन्द्र से लड़ाई लड़ रहे हैं, अगर उसमें कंधा-से-कंधा मिलाकर सहयोग नहीं करेंगे तब तक हम बिहार का सुधार नहीं कर सकते हैं............

सभापति : अब आप समाप्त करें।

श्री राजकुमार महासेठ : सभापति महोदय, अभी तो मुझे सिर्फ पाँच मिनट ही बोलने दिया गया है। सभापति महोदय, भाड़ा सामान्यीकरण का जो सिद्धांत है, उससे सबसे ज्यादा घाटा बिहार को हो रहा है। बिहार के उद्योगों को सबसे ज्यादा कुठाराघात इससे होता है। उसके लिए मौजूदा सरकार केन्द्र सरकार से लड़ाई लड़ रही है। भाड़ा सामान्यीकरण को जो व्यवस्था है उसमें सुधार होना चाहिए ताकि हमारे यहाँ जो कोयला है उसका उचित मूल्य मिल सके। अभी पंजाब में कोयला, लोहा का वही भाव है जो बिहार में है। यह नहीं होना चाहिए। इसके अन्दर सुधार करने की जरूरत है। इसमें थोड़ा सा सुधार होने का संकेत मिला है, जिससे हमें फायदा प्राप्त हुआ है।

सभापति महोदय, मुख्यमंत्री जी के द्वारा एक और लड़ाइं लड़ी जा रही हैं बिहार को विशेष दर्जा मिले । मुख्यमंत्री जी के साथ हमें भी इसके लिए केन्द्र सरकार से लड़ना चाहिए। बिहार को विशेष राज्य का दर्जा मिलना चाहिए। एक चौथाई आबादी यहां हरिजन एवं आदिवासियों को है लेकिन बिहार को विशेष दर्जा नहीं मिल रहा है.............

सभापति : अब आप समाप्त कीजिए।

श्री राजकुमार महासेठ : सभापति महोदय, मैं पाँच मिनट में समाप्त करता हूँ। एक चीज हम कहना चाहते हैं कि राजीव गाँधी अब इस दुनिया में नहीं रहे लेकिन उन्होंने इस बात की ओर 5100 करोड़ रुपये का पैकेज प्रोग्राम का प्रस्ताव दिया था। मै। कहूंगा कि चुनाव के समय कांग्रेस दल की ओर से जो 5100 करोड़ रुपये पैकेज की घोषण की गई थी तो उसका क्या हुआ। चुनाव के बाद वह घोषण कहाँ गयी? इस तरह की नीति अगर रही तो हम कैसे आगे बढ़ सकते हैं?

सभापति महोदय, विश्व बैंक से पहली बार ट्यूब वेल के लिए 2707.20 करोड़ हमलोगों ने पैसा लेकर सिंचाई की व्यवस्था की है सभापति महोदय, आपको जानकर यह खुशी होगी कि इससे पहले इस तरह का कोई भी योजना नहीं बनायी गयी थी। नोर्थ कोयल प्रोजेक्ट को 1974 में शुरूआत किया गया। 1978 में 350 करोड़ रुपया खर्च किया गया लेकिन जमीन का पटवन नहीं हुआ था। आज मौजूदा सरकार ने 10 करोड़ रु० खर्च किया है और उससे 50 हजार हेक्टेयर जमीन की सिंचाई होग। 10 दिनों के अन्दर सिंचाई का कार्य शुरू हो जायेगा।

सभापति : महासेठ जी, अब आप बैठ जाइये। अब रामाश्रय बाबू बोलेंगे।

श्री राजकुमार महासेठ : सभापति महोदय, हमारे क्षेत्र में उद्योग के नाम पर सिर्फ एक गन्ना का मिल है जो पचासों साल पुराना है। वहां नये उद्योगों की स्थपना होनी चाहिए । इतना ही कह कर मैं अपना भाषण समाप्त करता हूँ। (समाप्त)

श्री रामाश्रय सिंह : सभापति महोदय, यह जो बजट पेश किया गया है, मै। सका समर्थन करता हूँ। समर्थन इसलिये करता हूँ कि अभी तक जो बिहार राज्य की दबी-कुचली जनता है, गरीब जनता हैं कि उसको आशायें और अपेक्षाये इस मौजूदा सरकार से हैं इस बात को कहने में मैं संकोच नहीं करता हूँ कि जितने

उत्साह से हमने 90'91 और 91-92 के बजट का समर्थन किया वह उत्साह अब हमारे अन्दर नहीं है। मैं समर्थन कर रहा हूँ लेकिन बड़े भारी मन से समर्थन कर रहा हूँ।

सरकार ने जो बजट पेश किया है इसकी प्राथमिकताओं पर जब हमने गौर किया है तो घोर आश्चर्य हुआ है कि बहुत सारी जन-कल्याणकारी योजनायें जो राज्य के विकास के लिये बहुत महत्व रखती हैं, उसकी उपेक्षा की गई है। मुझे बोलने के लिये कितना वक्त मिला है इसकी गहराई में मैं नहीं जाना चाहता हूँ मुझे अहसास है। मैं तफसिल में नहीं जाकर सिर्फ इतना कहना चाहूंगा कि इन्होंने जो बजट में स्वास्थ्य उप-केन्द्रों के लिये प्रावधान किया है, बजट में दवा के लिये मात्र एक लाख एक हजार रुपये का प्रोवीजन किया है अपने इस बजट में पूरे राज्य के अन्दर 14,799 स्वास्थ्य उप केन्द्र के लिये इन्होंने राशि आंटित किया है। 14 पैसों मे न तो एक ब्लेट हो सकता है और न एक आदमी की अंगुली कट जाने पर उसका बैन्डेज-पट्टी ही हो सकता है। यह है प्राथमिकताओं की हालत। मैं। इतना ही कहना चाहता हूँ कि इन्होंने जो बजट बनाया हे, उसमें प्राथमिकतायें जहां होनी चाहिये वहां नहीं है। सिंचाई के सवाल पर, बाद से सुरक्षा के सवाल पर, कृषि के सवाल पर प्राथमिकताओं का अभाव है। इस ओर सरकार का ध्यान जाना चाहिये।

हुजूर हम कहना चाहेंगे कि जिन जिन वायदों को सरकार ने किया उसे पूरा नहीं कर रही है। ग्राम पंचायतों का चुनाव कराने का सरकार ने वादा किया था लेकिन वादा करके अब वह मुकर गई, बिल्कुल मुकर गई। सरकार ने वादा किया कि हम एक लाख लोगों को नौकरी देंगे। फिर कहा कि 25 हजार लोगों को शिक्षक बनायेंगे, कहा कि हम पोस्टल आर्डर देने की व्यवस्था को समाप्त कर रहे हैं। पोस्टल आर्डर के नाम पर अभी बेरोजगार और बेकार लोगों का लाखों रुपया लूटा गया। नौकरी उनको कब मिलेग? नौकरी मिलेगी भी या नहीं, आज राज्य के लोग पूछते हैं कि उन घोषणाओं का क्या हुआ? उन वायदों का क्या हुआ जिसमें कहा गया था कि हम पोस्टल आर्डर की पद्धति समाप्त करेंगे।

सभापति महोदय, होमगार्ड वालों को बहुत विश्वास दिया गया और उन्हें बहुत बड़ी उम्मीद बंधायी गयी। ओर जब वे अपनी मांग को ले कर पटना आते हैं तो उनको अपमानित होना पड़ता है और उनके साथ निर्दयता का व्यवहार किया जाता है। यह बहुत शर्मिंदागी की बात है।

इसी तरह सभापति महोदय, भूमि सुधार के बारे में भी बहुत ही बढ़ चढ़ कर बातें कही गयी। मुख्यमंत्री जी टेलीविजन पर आये, अखबार में बयान दिया गया कि ज़मीन जोतने वाले की हो जाएगी, यह हो जाएगा तो वह हो जाएगा। वेस्ट बंगाल की तरह भूमि सुधार यहां करेंगे, लेकिन आज तक कुछ नहीं किया गया ओर इससे लोगों का विश्वास उठता जा रहा है। हमको याद है कि ये प्राईवेट जो चीनी मिल है और जो सार्वजनिक क्षेत्र के जो चीनी मिल हैं, उनके यहां किसानों का करोड़ रुपया बकाया पड़ा हुआ है, ईख का बकाया है। पिछले वर्ष भी सदन में बात आयी थी और इस पर सभी दलों की बैठक करा कर इसके पैसे को दिलाया जाएगा, इस आश्वासन के बाद भी आज तक कोई ऐसी बैठक नहीं तय की गयी । इसी तरह एक-एक कारपोरेशन लेने के सवाल पर सौदेबाजी हो रही है और करोड़ों की सौदेबाजी हो रही है। हमको विश्वास में रख कर सरकार हमारा समर्थन कब तक लेती रहेगी? हम इस बात का बार-बार आपको अहसास करने को कहते हैकि आप बिहार की जनता के मैंडेट का सम्मान करें। बिहार की जनता का सहयोग ले कर, चाहे वह सी०पी०आई० हो, सी०पी०एम० हो या क्षारखंड मुक्ति मोर्चा हो, अपनी सरकार चला रही है। लेकिन सरकार को इसका अहसास नहीं है। ज्यादा दिन ऐसी बातें नहीं चल सकती हैं। हमारे मित्र श्री सत्यनारायण बाबू बोल रहे थे, उन्होंने सवाल उठाया है कि मंत्री लोगों को अपनी सम्पति का ब्यौरा देना चाहिए, चाहिए नहीं, मुख्यमंत्री ने भी घोषण की है कि हमारे मंत्री लोग और हमारे लोग अपनी-अपनी सम्पति का ब्यौरा देंगे ओर आज जब बिहार के हरेक कोने से यह मांग उठ रही है तो निश्चित तौर पर सरकार को अपने दामन की ओर देखना चाहिए ओर जनता का विश्वास लेने के लिए सम्पति का ब्यौरा देना चाहिए। हम यह नहीं कहना चाहते है कि इनके मंत्रि परिषद में जिनते लोग हैं, उन सबों के दामन काले हैं लेकिन कुछ ऐसे लोग हैं जिनका दामन काला है। मैं उनका नाम नहीं ले रहा हूँ, लेकिन उनका दामन गंदा हो चुका है। वे जनता में बदनामी हो चुकेहैं और उन्होंने राज्य सत्ता का उपयोग कर के लाखों में नहीं करोड़ों में सम्पति अर्जित की है और ऐसी हालत में सरकार चुप रहे और भ्रष्टाचार के खिालफ रहे, यह बहुत शोचनीय बात है।

सभापति महोदय, बहुत सारे माननीय सदस्यों ने कानून व्यवस्था की स्थिति के संबंध में जिक्र करने की कोशिश की है। मै। तीन-चार मिनट में अपनी बात खत्म्म कर लूंगा। हमारे माननीय विधायक श्री राजेन्द्र सिंह मुंडा, इनके ऊपर

हमला हुआ। इनके ऊपर बम चलाया गया, गोली चलायी गयी और इनकी हत्या करने की कोशिश की गई। परन्तु संयोग से ये बच गये। लेकिन इनका अंगरक्षक मारा गया इनको बचाने में और दूसरे साथी मारे गये। लेकिन सरकार ने मामले को गंभीरता से नहीं लिया। इनका अंगरक्षक मारा गया ओर बिना कफन के दाह-संस्कार कर दिया गया और हमारे साथियों की लाश तक नहीं लौटायी गयी ओर पुलिस वालों ने आततार्इयों का ही साथ दिया ओर आज तक माननीय विधायक पर हमला करने वाले, अंगरक्षक को मारने वाले तथा हमारे साथी को मारने वाले गिरफ्तार नहीं किये गये है। सांढ़ की तरह खुले सड़कों पर घूम रहे हैं। सभापति महोदय, ये चीजें कितने दिनों तक चल सकती हैं। आप नहीं अनुमन लगा सकते हैं कि जिस ढंग से राज्य के अन्दर नेशनाईज्ड रोड..........

सभापति (श्री इन्दर सिंह "नामधारी") : माननीय सदस्य, श्री रामाश्रय बाबू, आप बहुत पुराने सदस्य हैं, "सांढ़ की तरह खुले सड़कों पर घूम रहे हैं" क्या यह पार्लियामेन्टरी है?

श्री रामाश्रय सिंह : जी है।

श्री रघुनाथ झा : यह अन-पार्लियामेन्टरी नहीं है।

सभापत्ति (श्री इन्दर सिंह "नामधारी") : माननीय सदस्य, श्री रघुनाथ झा जी, जब आप यह कहते हैं तो इसे मान लेता हुँ।

श्री रामाश्रय सिंह : सभापति महोदय, अब मैं यह कहना चाहता हूँ कि सरकार ने नेशनलाइज्ड रोड रुट को डिनेशनलाइज्ड किया, इससे बढ़कर राज्य के राजस्व के साथ और क्या खेलवाड़ हो सकता है? वित्तीय संकट के नाम पर राज्य का राजस्व बढ़ाने के लिये आपने जो कदम उठाया है, उसके कारण आपका राजस्व घटता चला जा रहा है।

सभापति : अब आप समाप्त कीजिए।

श्री रामाश्रय सिंह : सभापति महोदय, अन्त में मैं अपने जिले की बात कहना चाहता हूँ। वहां के सदर डी०एस०पी० ने 20 तारीख को वहां सी०जे०एम० के डेरा में कुछ गुंडों को भेजकर उनको पीटवाया। इसके विरोध में आगामी दो तारीख को बिहार राज्य के न्यायिक सेवा संघ के सभी पदाधिकारी हड़ताल पर जा

रहे हैं। चार तारीख को पूर्वी चम्पारण जिला के सभी जनवादी संगठन क लोग, वहां की जनता सड़कों पर घरना देने वाली है। उस ज़िले के कुछ माननीय विधायक वहां के डी०एस०पी० की बलाली करते है।

सभापति : अब आप समाप्त कीजिए।

श्री लाल बाबू प्रसाद : सभापति महोदय, मैं व्यवस्था पर खड़ा हूँ। चाहे कोई भी दल के लोग हों, चाहे सी०पी०एम० के हो, चाहे सी०पी०आई० के हों, चाहे झारखंड के हों, कोई भी माननीय सदस्य, इस तरह की बात नहीं कह सकते है, मैं श्री रामाश्रय बाबू को चैलेंज करता हूँ.........

(इस अवसर पर सदन में शोरगुल)

सभापति : शांति-शांति। आप लोग कृपया बैठ जाइये।

श्री त्रिवेणी तिवारी : सभापति महोदय, इस बात को प्रोसिडिंस से निकाल दिया जाय।

श्री रघुनाथ झा : सभापति महोदय, मैं इतना ही निवेदन करना चाहूंगा कि माननीय सदस्य, श्री रामाश्रय बाबू ने कहा कि कुछ विधायक दलाली करते हैं, इस शब्द को प्रोसिडिंस से हटा दिया जाय।

सभापति (श्री इन्दर सिंह "नामधारी") : इस शब्द को प्रोसिडिंग्स से हटा दिया जाय। माननीय सदस्य, श्री दिग्विजय प्रताप सिंह, अब आप अपनी बात कहें।

श्री दिग्विजय प्रताप सिंह : सभापति महोदय, आज सदन में बजट के पक्ष में, विपक्ष में बातें हुई। मैं सिर्फ एक कहनी कह कर अपना भाषण समाप्त करूंगा। मैंने पढ़ा था, एक भ्रष्टाचार सम्मलेन हुआ था, पूरे भारत में भ्रष्टाचार में प्रथम कौन आता है, द्वितीय कौन आता है, तृतीय कौन आता है, इस विषय पर चर्चा उस सम्मेलन में की गय। जब सम्मेलन आहूत की गयी तो उसमें जजों को आमंत्रित किया गया। उसमें मिस्टर चड्ढा मिस्टर चीमा, मिस्टर वर्मा आये। जब उनको मंच पर लाया गया तो उन्होंने कहा कि मुर्गे की टांग गयी पेट में।

श्री दिग्विजय प्रताप सिंह : और लंच के लिए इसकी छुट्टी कर दी गयी और व्याकुल हो गये, लोग आये हैं, हम आये हैं और पूरी दुनिया के लोग देख रहे हैं कि इतना बड़ा भ्रष्टाचार सम्मेलन हो रहा है और आपने समय दिया था 11

बजे, हमने समय दिया था 7 बजे और उसी समय से हम बैठे हुए हैं। हमने एक बजे कर दिया तो, तो कुछ नहीं सुना जायगा। जब लंच से वे लौटकर आये तो एक बजे सम्मेलन हुआ। बजट भाषण हो रहा है। जब एक बजे सम्मेलन शुरू हुआ तो उन्होंने कहा धैर्य रखीये सभी लोग आ रहे हैं और जब बजट शुरू हुआ और जब भाषण शुरू हुआ तो लोग अपनी-अपनी बात कहने लगे। तो उन्होंने कहा पेड़ काटने का हुक्म मिला था लेकिन आप पश्चिम की ओर देखेंगे तो पायेंगे कि वन का वन खाली कर दिया है लेकिन एक बात और कहेंगे कि जो हमने सोफा सेट रखा है उसका एकाउन्ट नहीं बनाये हैं वह 4-5 लाख रुपये का है। उन्होंने कहा "शाबास", ठीक है तुम एकाउन्ट नहीं रखे हो यह अच्छी बात है। बिहार का नम्बर आया। इसी बीच एक प्रोफेसर घुसे और कहा कि हम भी भ्रष्टाचार में कमजोर नहीं हैं। और जब हम अन्दर गये तो धक्का देकर वाहर निकाल दिया गया और कहा गया कि 6 हजार का तनख्वाह पाते हो और 6 हजार का ट्यूशन तुम नहीं पढ़ाते हो? उसके बाद बिहार का पी०डब्लू० डी० आया और उनसे भी पूछा गया तो उन्होंने कहा कि एक उदाहरण दीजिए कि आप क्या देना चाहते हैं उन्होंने कहा ये किला है और वह रोहतास में है। जिस समय से पी०डब्लू० डी० बना उसी समय से वह बन रहा है और एम०बी० में चढ़कर पेमेंट कर रहे हैं। अगर देखीयेगा तो यहां से वाशिंगटन नाम का रोड बनकर तैयार होजायगा लेकिन किा ज्यों का त्यों, जस का तस है ओर पेमेंट भी हो गया। उसके बाद जब प्राईज डिस्ट्रीब्यूसन शुरू हुआ, उसमें सोने, चाँदी और अन्य सामान थे उसी समय कोरिडर के अन्दर एक सफेद गाड़ी से एक आदमी उतरा और उस जगह सभी लोग खड़े होकर कहना शुरू किए जो निम्न प्रकार है:-

"तुम्हीं लातम, तुमहीं जुतम

तुम्हीं कयुग के देवम

न तो हम जजम कैसम"

यानी जो आज करपशन की चर्चायें हो रही हैं बिहार के अन्दर, देश के अन्दर और चारों ओर चर्चाएं हो रही हैं लेकिन हमलोग जरा अपने छाती पर हाथ रखकर सोचें तो इसके कारण का पता चल जायेगा। क्या हम इसके कारण को नहीं जानते हैं कि क्यां हो रहा है? लेकिन हमलोग पत्थर की मुर्ति की

तरह सुन रहे हैं, सुंट सलामी ले रहे हैं लेकिन बिहार की जनता आज तबाह है हमलोग सोचें कि आज बिहार की स्थिति क्या हो गयी है जवाहर रोजगार योजना में तीन प्रतिशत ऑफिस में, मुखिया जी पाँच प्रतिशत और नीचे पाँच प्रतिशत चल रहा है। हां यह बात जरूर है कि और अन्य योजनाएं भी है जिसके बारे में हम नहीं जानते हैं। इस तरह से परसेंटेज लिया जाता है। इस तरह से मैं कहूंगा कि बिहार की आठ करोड़ जनता के सामने हमोग नहीं निकल पायेंगे और गोलियों की बौछार हो जायेगी। अभी भी समय है हमोग चेतकर काम करें।

याचिकाओं का उपस्थापन:

सभापति : बिहार विधान-सभा की प्रकिया एवं कार्य संचलान नियमावली के नियम 267 के अन्तर्गत निम्नलिखित सदस्य अपने नाम के सामने अंकित स्वीकृति याचिका सदन में उपस्थापित करेंगें :-

कमांक	सदस्य का नाम	स्वीकृत योचिकाओं की संख्या	
(1)	श्री वेणी प्रसाद गुप्ता,	स०वि०स०	06
(2)	श्री गोपीनाथ सिंह,	,,	06
(3)	श्री दिनेश चन्द्र यादव,	,,	04
(4)	श्री दिलीप वर्मा,	,,	03
(5)	श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह,	,,	02
(6)	श्री प्रेम कुमार ,	,,	02
(7)	श्री रामजी लाल शारदा,	,,	02